Sem. 6

हिन्दी पत्रकारिता

Core-14

1

प्रश्न: हिन्दी पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं? इसकी अवधारणा पर विचार करें।

अथवा

हिन्दी पत्रकारिता को परिभाषित करते हुए इसके स्वरूप पर विचार करें।

उत्तर: वर्तमान परिदृश्य में जीवन की घटनाओं, विसंगतियों, आवश्यकताओं, उपलब्धियों और अनिवार्यताओं को सही रूप में अभिव्यक्त करने का कार्य जिस माध्यम के द्वारा सम्पन्न हो रहा है, वह सशक्त माध्यम है - पत्रकारिता। यह चुनौती भरा कार्य, केवल पत्रकारिता ही कर सकती है, ऐसा कहना ग़लत नहीं होगा। वास्तव में यह ऐसा माध्यम है, जो मनुष्य को मनुष्य से और समाज को विश्व से जोड़ता है। इसे देश और जनतंत्र का चौथा स्तंभ भी कहा जाता है। यह भी कहा जाता है कि पत्रकारिता लोकतंत्र का प्रहरी है। अतः पत्रकारिता एक गंभीर एवं जिम्मेदारीभरा कार्य है। यह मानव जीवन से सीधी एवं गहराई से जुड़ी है। निश्चय ही यह जीवन के सुख-दुःख से संबंध रखती है तथा जनता की आशा-आकांक्षाओं को साकार करती है।

पत्रकारिता का उद्देश्य भी, इसका लक्ष्य एक आदर्श समाज की स्थापना करना होता है, जिसमें लोग हर दृष्टि से सहज, स्वस्थ एवं सम्पन्न जीवन-यापन कर सकें। इस नज़रिये से देखा जाय तो पत्रकारिता का उत्तरदायित्व दूसरे कार्यों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण एवं चुनौतियों से भरा है।

डॉ० सफीउल्लाह अंसारी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज
जमशेदपुर, झारखण्ड-831001

Scanned with CamScanner

'पत्रकारिता' शब्द अंग्रेजी के 'जर्नलिज्म' (Journalism) का हिंदी रूपान्तर है। सामान्य रूप से देखें तो पत्रकारिता समाचारों का जनसंचार है। कोई भी घटना, सूचना अथवा विचार जब लोगों का पहुँचाया जाता है, तो वह समाचार बन जाता है। जो व्यक्ति समाचार प्राप्त करता है और प्रकाशित करता है वह पत्रकार कहलाता है। अर्थात प्रकाशन, संपादन, लेखन एवं प्रसारणयुक्त समाचार-माध्यम का व्यवसाय पत्रकारिता है। दूसरे शब्दों में देश-विदेश में घटनेवाली घटनाओं को समाचार के रूप में परिवर्तित करने की प्रक्रिया को पत्रकारिता कहते हैं।

सी. जी. मुलर के अनुसार "पत्रकारिता सामाजिक ज्ञान का व्यवसाय है। इस व्यवसाय में आवश्यक तथ्यों की प्राप्ति, सावधानीपूर्वक उनका मुल्यांकन तथा उचित प्रस्तुतीकरण होता है।

सामाजिक ज्ञान अर्थात हर क्षण होने वाले नये-नये परिवर्तनों की जानकारी, तथ्यों की प्राप्ति और उनका समुचित रूप में मुल्यांकन करने के बाद प्रस्तुतीकरण, यह एक जटिल एवं लम्बी प्रक्रिया है। साथ ही यह काम मेहनतवाला भी है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया पत्रकारिता के अन्तर्गत शामिल है। अभी तक तो प्रायः अक्षरों से भरे मुद्रित समाचार पत्र ही पत्रकारिता के प्रतीक थे, लेकिन अब मुद्रित समाचार पत्रों, पत्रिकाओं से लेकर रेडियो (आकाशवाणी), दूरदर्शन (टेलीविज़न), वीडियो, फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप्प (whatsapp), आइमो (IMO) इत्यादि संप्रेषण माध्यम इसमें शामिल हैं। डेविड वोन राइट के शब्दों में, हम कह सकते हैं कि 'पत्रकारिता जन-संचार है। इस विश्व में क्या हो

रहा है, इस बात को जानने के लिए सदैव उत्सुक मानवीय उत्सुकता को संतुष्ट करने के लिए दैनिक घटनाओं को कुछ शब्दों, ध्वनियों या तस्वीरों को जनसंचार के तंत्र द्वारा प्रस्तुत करता है।

आज पत्रकारिता केवल लिखित और मुद्रित सामग्री तक ही सीमित नहीं है, इसका क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। वह अपने भीतर आधुनिक समग्र रूपों को समाहित कर लेता है। रेडियो और टेलीविजन को भी अपने अंदर समेट लेने से ध्वनि और चित्र अर्थात् श्रव्य-दृश्य माध्यम भी आज पत्रकारिता के अंग हैं। कलिक और फोटोग्राफ अंग हैं। इस दृष्टि से डॉ. अर्जुन तिवारी ने पत्रकारिता की एक सटीक एवं सर्वथा ग्राह्य परिभाषा देने की कोशिश की है। उनके अनुसार "प्रकाश, चित्रों द्वारा प्रस्तुतीकरण तथा प्रसारण-हेतु सामयिक और सरस तथ्यों के संग्रह और संपादन को पत्रकारिता कहा जा सकता है।"

पत्रकारिता को यदि हम 'सूचनाओं का भण्डार' कहें तो ग़लत नहीं होगा।

विश्लेषण, समीक्षा, मूल्यांकन - ये पत्रकारिता के महत्वपूर्ण तत्व हैं। किसी भी घटना की जानकारी, या कोई सूचना जन सामान्य तक तत्काल हू-ब-हू नहीं पहुँचाई जा सकती है। पहले उसकी सत्यता-असत्यता, उसकी सामाजिक उपयोगिता को देखा जाता है। उन घटनाओं की तह में जाया जाता है। उसकी बारीकियों पर विचार किया जाता

है। इन सब तथ्यों के आधार पर कोई भी 'स्टोरी' तैयार की जाती है।

उपर्युक्त परिभाषाओं को ध्यान में रखते हुए पत्रकारिता का स्वरूप बहुत ही संक्षेप में इस प्रकार है:

1. पत्रकारिता अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आभिजात्य कर्म है।
2. इसका जीवन और जगत से गहरा संबंध है।
3. इसका उद्देश्य एक ऐसे ~~समाज~~ आदर्श समाज की संरचना करना है, जिसमें लोग स्वस्थ, प्रसन्न और हर दृष्टि से सम्पन्न जीवन जी सकें।
4. इसमें नवीन से नवीनतम ~~घटनाओं~~ सामाजिक घटनाओं को महत्व दिया जाता है।
5. यह नवीनतम घटनाओं के संकलन, चयन, संपादन एवं प्रकाशन-संप्रेषण की समग्र प्रक्रिया का नाम है।
6. इसके अन्तर्गत घटित घटनाओं को प्राप्त कर, उनका सावधानीपूर्वक विश्लेषण-मूल्यांकन कर, उन्हें जन-जन तक पहुँचाना होता है।
7. इसे सामाजिक ज्ञान का व्यवसाय कहा जा सकता है।
8. इसके अन्तर्गत सभी तरह के संचार-माध्यम सम्मिलित किये जा सकते हैं। विशेष रूप से समाचारपत्र पत्रिकाएँ, रेडियो (आकाशवाणी) तथा दूरदर्शन (टेलीविजन) इत्यादि।

—x—

डॉ० सफीउल्लाह अंसारी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज
जमशेदपुर, झारखण्ड-831001

Scanned with CamScanner